P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-VIII* April-2016

आधुनिक अवधी काव्य की साहित्य सृजनता

आलोक कुमार विश्वकर्मा
असि0 प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय,
फाफामऊ

सारांश

हिन्दी साहित्य की प्रमुख 5 धाराएँ हैं। जिनमें प्रेमाख्यान, काव्य संत काव्य, कृष्ण काव्य और रीति काव्य हैं। इनमें से तीन धाराओं प्रेमाख्यान, रामकाव्य तथा संत काव्य का इतिहास तो अवधी से ही है। शेष कृष्ण काव्य और रीति काव्य भी अवधी में रचे गये हैं। अवधी कविता अपने अंतःसत्व में सदा ही महाप्राण रही है। उसकी प्रकृति ओजस्वी और स्वभाव सात्विक है। ऐसा इसलिए सम्भव हुआ है कि वह लोक सम्भवा है। लोक से रागिक जुड़ाव का तार कभी टूटा नहीं। उसका राग कामना के कर्दम में कभो डूबा नहीं–उसके राग की तंत्री काम के झंकार से नहीं, राग के झंकार से झंकृत होती है।

मुख्य शब्दः भक्तिकाव्य,निर्गुण संत काव्य,सूफी प्रेमाख्यानक काव्य– ख्वाजा अहमद कृत ''नूरजहाँ'' शेख रहीम कृत ''भाषा प्रेमरस'',रामकाव्य, बनादास कृत''उभय प्रबोधक रामायण'',कृष्ण काव्य,नीति काव्य, श्रृंगारिक काव्य

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का अद्यतन इतिहास लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना है। भारतेन्दु युग से लेकर अद्यतन रचित अवधी काव्य पर युगीन प्रवृत्तियों का व्यापक प्रभाव पड़ा है। अवधी के आधुनिक काल में कथ्य एवं िशल्प के क्षेत्र में जहाँ नवीन प्रवृत्तियाँ लक्षित होती हैं वहीं परम्परागत प्रवृत्तियाँ भी अपने अस्तित्व को बनाये हुए हैं।

प्रस्तुत शीर्षक के अन्तर्गत अवधी काव्य के विविध प्रवृत्तियों की परम्परागत और नवीन दो वर्गों में विभक्त कर उनके अनु"ीलन का प्रयास हमारा अभिप्रेत होगा।

परम्परागत प्रवृत्तियों का स्वरूप

अवधी के विकास के प्रारम्भिक युग से (वि"ोषतः मध्य काल से) आज तक निरन्तर चली आती हुई भक्ति काव्य अर्थात् संत काव्य, प्रेमाख्यानक – काव्य, राम–काव्य, कृष्ण–काव्य, नीति–काव्य और वरवै–काव्य की प्रवृत्तियों की गणना परम्परागत प्रवृत्तियों के अन्तर्गत की जाती है। इनमें से प्रेमाख्यानक–काव्य और वरवै की रचना अवधी की निजी प्रवृत्तियाँ हैं, जो उन्हें साहित्य की किसी अन्य बोली में नहीं मिलती है। अतः उन्हें वि"ोष प्रवृत्तियों के रूप में तथा शेष को सामान्य प्रवृत्तियों के रूप में स्वीकार करना उचित प्रतीत होता है।

भक्ति–काव्य

आज विज्ञान के युग में ई"वर और धर्म को चुनौती दी जाती है और दूसरी ओर वि"व के शीर्षस्थ दा"ानिक यह अनुभव करते जा रहे हैं कि वि"व कल्याण के लिए जीवन में बुद्धि तत्व के साथ हृदय तत्व का समावे"ा आव"यक है। सृष्टि के आदि से आज तक विकसित मानवता के इतिहास में इन दोनों का समन्वय परिलक्षित होता रहा है। वि"व में मानव के पास जब हृदय शीलता रहेगी, तब तक श्रद्धा और प्रेम रहेगा तब तक भक्ति रहेगी क्योंकि ''श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम ही भक्ति है।''

आधुनिक अवधी कविता के विकास यात्रा पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट लक्षित होता है कि उसमें अतीत कालीन भक्ति काव्य की सम्पूर्ण धारायें आज प्रवाहित हो रही हैं। संक्षेप में उनका सिंहावलोकन प्रस्तुत किया जा रहा है

निर्गुण सन्त काव्य

अवधी की परम्परागत आधुनिक मुक्तक काव्य धारा के विकास में आधुनिक संत कवियों में अमीर अली, राम सेवक, मुगे"वराचार्य, देवानन्द साहब, भगवान बख्श सिंह आदि का मुख्य योगदान है। इन संत कवियों में से अमीर अली की रचनायें वि"ोष रूप से ध्यान देने योग्य हैं, क्योंकि इनमें कबीर की प्रमुख विचार धारा समाविष्ट है। कबीर की ही तरह इन्होंने अपने निर्गुण एवं निराकार साध्य को ''राम'' कहकर सम्बोधित किया है

''हमहूँ जैबे वह देस जहाँ के बनिया राम।''

कबीर के जैसे ही अमीर अली का पियतम् आत्मा में ही निवास करता है। वह तीर्थों, व्रतों, वेद, पुराण, पूजा और नमाज में भी नहीं है

''मोरे मन बसि गयो अविना"ाी रे।
तीरथ बरत मनहिं ना भावत कहाँ मथुरा कहाँ का"ाी रे।
मोरे कथा भागवत गीता गावत वेद बतावत गासी रे।
मोरे.''

कबीर का अनुसरण करते हुए अमीर अली परमात्मा की प्रियतम और स्वयं को उनकी प्रियतमा स्वीकार करते हैं। अमीर अली भी, ''अनहद'' की ''खंझडी'' बजाते हैं। उन्हें नि"ा–वासर अनहद नाम सुनाई पड़ता रहता है। प्रेम की अग्नि ध्यान की धूनी अनहद खंझड़ी बजैबै।

इसी तरह

नि"ादिन अनहदनाद बजति है झीना"ाब्द सुनाति। अमीर अली का ''हरि'' ''त्रिकुटि–कोट'' में निवास करता है और कबीर की तरह ही उसका साक्षात्कार कराने का प्रधान माध्यम गुरू ही है।

अमीर अली के पदों में आत्मा और परमात्मा के सान्निध्य की झलक कहीं संयोग श्रृंगार, तो कहीं वियोग श्रृंगार के रूप म दृष्टिगोचर होती है।

बहरे बंगलवा माँ सैंय्या संग सोवत।
'अमीर अली' पिय हनत केवार।।

कबीर की तरह अमीर अली ने भी आत्मा–परमात्मा के सम्बन्ध का प्रका"ान प्रायः रहस्यात्मक शैली में किया है। सांसारिक रूपकों के सहारे तथा पति–पत्नी के प्रतीकों द्वारा उन्होंने भावनाओं का प्रका"ान किया है। एक उदाहरण दृष्टव्य है

नैहर अंगिया धुमिल भई सगरी।
सासु मोरी मारे ननद गरिआवै मैके बात सब बिगरी।
'अमीर अली' गुरू धोबिया धोवइबै कुन्दी कल्प करिनइरी।''

सूफी प्रेमाख्यानक काव्य–ख्वाजा अहमद कृत– ''नूरजहाँ'' शेख रहीक कृत ''भाषा प्रेम रस'' और नसीर कृत–''प्रेमदर्पण'' आदि आधुनिक सूफी प्रेमाख्यानक काव्य हैं। इन सूफी प्रेमाख्यानकों में कोई नवीनता नहीं पायी जाती है बल्कि उनकी भावानुभूति और अभिव्यक्ति एक तरह से परम्परागत ही है।

उपर्युक्त तीनों ग्रन्थ साधारण कोटि के माने जायेंगे। उनमें जायसी कृत–''पद्मावत'' जैसी भव्यता, दिव्यता के द"ार्न नहीं होते हैं। इसलिए उनका वि"ोष विवरण–विवेचन देने की आव"यकता नहीं है। सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों की यह परम्परा पूर्व मध्यकाल से लेकर आधुनिक युग तक अवधी में चली आ रही है। वस्तुतः यह अवधी की निजी सम्पत्ति है, ब्रजादि में प्रायः इसका अभाव है।''

राम काव्य

अवधी के आधुनिक राम काव्य की धारा वस्तुतः मुक्तक–काव्य दोनों ही शैलियों में प्रवाहित हुई है। प्राचीन परम्परा से ही अवधी राम–काव्य की भाषा रही है। राम–भक्ति शाखा की आधुनिक मुक्तक कारों में क्रम"ाः देव नारायण, हनुमान शरण ''मधुर अली'' सीता प्रसाद, सीता राम शरण, भगवत प्रसाद कृत – ''रूप कला'', राम–बल्लभ शरण कृत– ''युगल बिहारिणी'' सियाराम शरण, कृत–'मधुकारिया ''प्रेम अली'' आदि कृतियों के नाम वि"ोष उल्लेखनीय हैं। वास्तव में यह राम–भक्ति की रसिकोपासना (मधुरोपासना) शाखा के कवि हैं। वैसे इन सभी भक्त कवियों का काव्य तुलसी के राम–काव्य की तरह मर्यादावादी नहीं है। डॉ0 श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप' का कहना है कि राम–भक्ति में इस शाखा का उद्भव बहुत कुछ लीला–पुरूषोत्तम राम के ही नहीं प्रत्युत रस–राज सीतापति राम के उपासक हैं। वस्तुतः वे राम से भी अधिक राम बल्लभा सीता के उपासक हैं ''जिनकी शीतल छाया में राम का भी निवास है।''

इन कवियों ने राम कथा के अन्तर्गत केवल सीता–राम से सम्बन्धित कोमल और मधुर चरित्रों का ही गान किया है। कारण यह है कि मधुरोपासना में वन–गमन आदि करूणाजनक दुःख जनक एवं कठोर भावों का निरूपण वर्जित है। इन रसिक राम–भक्त कवियों ने प्रायः प्रबन्ध शैली में पद या गीतों की रचना की है, क्योंकि गीत की सहज प्रवृत्ति कोमल, सुकुमार और मधुर भावों की ही होती है। इसलिए इसमें कठोर और परूषा भावों से सम्बन्धित रसों का समावे"ा पूर्णतया वर्जित है। कहा जा सकता है कि रसिकोपासक कवि एक सखी के रूप में आनन्द लेने और उसे ही चित्रित करने में अभिरूचि रखता है। अवधी के आधुनिक प्रबन्ध काव्य धारा के अन्तर्गत कुछ प्रबन्ध काव्यों का उल्लेख इस प्रकार है–

बनादास कृत

'उभय प्रबाधक 'रामायण' जानकी प्रसाद उपनाम रसिक बिहारी–कृत राम–रसायन, राम–निवास रामायण–माधव सिंह कृत– श्री राम विलास, शीतल सिंह गहरवार कृत– ''श्री सीताराम–चरितायन'', मथुरा प्रसाद साहू कृत–'राम–सीता विवाह' आदि।

आधुनिक अवधी में लिखे गये उपर्युक्त ग्रन्थ हिन्दी की राम–काव्य परम्परा को अक्षुण्ण बनाये हुए हैं। पर इन ग्रन्थों में काव्य के उत्कृष्ट तत्वों का अभाव है।

कष्ण काव्य –कृष्ण

काव्य का भारतीय जन–जीवन से कुछ ऐसा रागात्मक सम्बन्ध है कि समय का प्रवाह उन्हें उससे अलग नहीं कर सकता। वस्तुतः हिन्दी काव्य उनकी लीला भूमि वृन्दावन के कुन्जों में तथा यमुना तट पर ही पल्लवित–पुष्पित हुआ है। ''कालिन्दी'' के स्मरण से ही हमें कृष्ण की आभा का आभास होता है। ब्रज का नाम लेते ही ब्रज नन्द हमारे मानस पर रूपायित हो उठते हैं। गोकुल का उच्चारण मात्र ही गोपाल की मुरली हमारे हृदय को झकझोर देती है, और कुरूक्षेत्र कहते ही ''कृष्ण की गीता'' हमारे मस्तिष्क में गूँज जाती है।

मध्यकालीन हिन्दी कृष्ण

काव्य के सभी अभावों को आधुनिक अवधी काव्य में पूरा करने का श्लाघनीय प्रयास किया है।जैसे –द्वारिका प्रसाद मिश्र कृत–'कृष्णायन' नामक प्रबन्ध–काव्य इस तथ्य का प्रमाण है इनको रचना का मुख्य उद्दे"य कृष्ण की दे"ोद्धारक एवं लोक नायक के रूप में प्रस्तुत करना है।

नीति काव्य

नीति काव्य वह है जो मानव को सन्मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा दे। डॉ0 भोलनाथ तिवारी के शब्दों में ''मनुष्य की सर्वोन्मुखी उन्नति की प्रदि"ाका ही नीति है।''

एक तरह से नीति काव्य में अतीत के अनुभवों का निचोड़ होता है, जो मानव के भावी जीवन का मार्ग

प्र"ास्त करता है। डॉ0 श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप' कह कहना है– कि 'रस परक कविता यदि थोड़ी देर के लिए हृदय को रस सिक्त और आनन्द विभोर कर देती है, तो नीति काव्य अंधकार में प्रका"ा की किरण विकीर्ण कर हृदय को चमत्कृत करता हुआ संतप्त मन की शान्ति देता है।''

यदि रसपरक काव्य साहित्य रसिकों की वस्तु है, तो नीति–काव्य जनता की निधि है। अवधी के आधुनिक कवियों के अन्तर्गत नीति–काव्य के क्षेत्र में प्रताप नारायण मिश्र, f"ाव सम्पति शर्मा, सुधाकर द्विवेदी 'सिरस', राम स्वरूप मिश्र 'वि"ाारद', तुलसी राम वै"य 'भास्कर', चन्द्र भूषण त्रिवेदी 'रमई काका, पं0 व"ाीधर शुक्ल, दया"ांकर दीक्षित 'देहाती' आदि का नाम प्रमुख है। यहाँ संक्षेप में आधुनिक अवधी के नीति काव्य के कुछ कवियों और उनकी रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं

1. प्रताप नारायण मिश्र कृत– 'लोकोक्ति शतक'
2. f"ाव सम्पत्ति शर्मा कृत– 'नीति चन्द्रिका, नीति शतक'
3. सुधाकर द्विवेदी कृत– 'फुटकल दोहे'
4. राम स्वरूप 'वि"ाारद' कृत– सर्वोदय शतक, सुविचार सत–सई,
5. पं0 चन्द्र भूषण त्रिवेदी 'रमई काका' कृत–काका की कहावतें,
6. पं0 व"ाीधर शुक्ल कृत–मसले आदि।

नीति–काव्य के वर्ण्य

विषय आचार–विचार, व्यवहार, धर्म, समाज, राजनीति, स्वास्थ्य, खेती–बारी, नारी, व्यापार और शकुन आदि हैं। मन की चंचलता मानव को कुमार्ग पापाचार और पतन की ओर ले जाती है।

अतः मन और इन्द्रियों पर विजय पाने के लिए पं0 राम स्वरूप मिश्र 'वि"ाारद' का एक नीतिपरक दोहा प्रस्तुत है जिसमें वह भगवान् से प्रार्थना करते हैं

मन पतंग मानत नहीं, हे प्रभु थकेउ मनाय।
लिये जात है, पतन तन, दौरहु करहु सहाय।

समाज में धनाढ्य लोग एक तरफ शोषितों का शोषण करते हैं और दूसरी आर वे दानी होने का स्वांग रचाकर मुक्ति की कामना करते हैं यह कैसी विडम्बना है ?

''रकत चूसि के दीन के, पूजी पति पद पाय।
गरब सहित कुछ दान दे, चाहत स्वर्ग मिलि जाय।।''

इसी तरह चन्द्र भूषण त्रिवेदी 'रमई काका' ने 'घटिहा मीत' और पक्के ठगफ' का लक्षण सहित उदाहरण प्रस्तुत है

औषधि व्याँचे साँपु देखाय।लिल्लामी माँ खुब चिल्लाय।।
पइसा मांगै भेषु बनाय।जानि लिह्यो पक्का ठगु आय।।
– चन्द्र भूषण त्रिवेदी 'रमई काका'

इसी तरह पं0 व"ाीधर शुक्ल की राजनीतिक सूक्तियाँ वि"ोष महत्वपूर्ण हैं। शुक्ल जी का कहना है कि जो लोग दे"ा, समाज के साथ वि"वासघात करते हैं, एक दिन वे भी वि"वासघात की खाई में गिरते हैं जैसे–

देस का धोखा दिहिसि, परिवार का धोखा दिहिसि।
राजि धोखे से लिहिसि, धोखा वहौ खइवै करी।।

पं0 व"ाीधर शुक्ला जी का कहना है कि जिस प्रकार कागज की नाव कभी तैर नही सकती, उसी तरह अत्याचार भी कभी फूल–फल नहीं सकता यथा– जुल्म फूलै नहीं नाव कागज की कबहूँ पार होइ पइबै करी।।

व"ाीधर शुक्लशुक्ल जी की सामाजिक सूक्तियाँ भी द"ानीय हैं। उनकी सामाजिक सूक्तियों के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं–

जो पढ़ाइ ना उन्है, तौ राम रावन का न ज्ञान।
जो पढ़िन तौ सौक, फै"ान की नई लगिबै करी।।
जबकि–डिगरी लै चुकी, तौ नौकरी करिहै जरूर।
मर्दु मेंहरी की कमाई, कुछ न कुछ खइवै करी।।

सूर्य प्रका"ा त्रिपाठी ''"ूल'' का मानना है कि भारतवर्ष की तटस्थ विदे"ा नीति दो नावों पर सवार होने के समान है। इस सम्बन्ध में ''"ूल'' जी की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है–

भलि तटस्थ स्वाधीन है, अपन विदे"ाी नीति,
लाख बजावौ गाल मुलु, होय नहीं परितीति।
सूर्य प्रका"ा त्रिपाठी ''"ूल''
''"ूल की कुण्डलियाँ पृ02

इसी तरह तुलसी राम वै"य, पं0 सुधाकर द्विवेदी विरचित अनेक सूक्तियों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। ये कृतिकार अवधी भाषा–भाषी समाज में अपनी वि"ाष्ट स्थान रखते हैं।

''दुर्भाग्य व"ा उनकी एकाकी साधना के कारण उनके काव्य प्रका"ा में नहीं आ सके । ऐसे कवियों की जानकारियाँ तो हैं, किन्तु उनके व्यक्तित्व तथा सम्पूर्ण कृतित्व को उजागर करने हेतु समाज और साधन की आव"यकता आड़े आती है।'' बरवै–काव्य– बरवै एक छोटा छन्द है। भाषा की सामासिकता तथा भावों की समाहार शक्ति में बरवै–छन्द बेजोड़ है। मुक्तिक की सभी वि"ोषतायें इसमें समाविष्ट हैं। अपने संक्षिप्त कलेवर के कारण बरवै सूक्ति रचना की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है। इस छन्द पर अवधी का एकाधिकार है। इस छन्द के विषय में डॉ0 भगीरथ मिश्र का कहना है कि ''अवधी का वि"ाष्ट और अपना सबसे अनोखा छन्द बरवै है, जिसमें भाव, संस्कृति, अनुभूति तथा गीत अवधी के लघुता–परक शब्दों में बड़ी सुन्दरता से परिलक्षित होती है। बरवै का भाव हृदय के भीतर धंसता चला जाता है, सौन्दर्य और भाव को सूक्ष्यभिव्यक्ति के लिए अवधी का बरवै छन्द अद्वितीय है।''

वहिके सुख की कुछ थाह कहाँ इंदरानी पावयि,
नटवर नयिना नाचि–नाचि चरवाहे की छवि

ताकि रहेकोटि–कोटि सयोंगों का सुख प्रिय विरह के टीस जन्य आनन्द के सम्मुख फीका होता है। संयोग में ऐन्द्रिय–वासना युक्त स्वार्थ की गन्ध होती है और वियोग में निःस्वार्थ की सुरभि। बृजेन्द्र खरे का एक प्रवास जन्य विरह –श्रृंगार गीत दृष्टव्य है–

नागिन बन राति डसि–डसि कै खीचै मोर परनवा
कागा आइ चिठावै रोजै भोरे मोरे अँगनवा
विछोरे हमारे सपनवा रूठ हमरे कंगनवा
इहु महिनवा भावैना।

स्वतंत्र भारत साप्ताहिक वि"ोषांक 14 जून, 1959

इसी तरह पारस भ्रमर का एक विरह गीत निकट प्रवास की स्थान भिन्नताव में भी विरह जन्य भावना की अभिव्यक्ति करता है जैसे–

छुइ–छुइ जाय करे जन छिन–छिन दक्खिने केरि बयरिया
खेतन जागै राति किसनऊअंगनवा बीच प्रियरियइं

इसी तरह व"ाीधर शुक्ल, गुरू प्रसाद सिंह 'मृगे"ा', चन्द्र भूषण त्रिवेदी, हरि"चन्द्र पाण्डे 'सरल' लवकु"ा दीक्षित, राम बहादुर सिंह भादौरिया, सती"ा चन्द्र आर्य, छवि राम मिश्र, आदि की कविताओं में स्वच्छ श्रृंगार भावना का मन मोहन चिताकर्षक निरूपण हुआ है। हरि"चन्द्र पाण्डे का एक लोकगीत प्रस्तुत है जो मर्म को छू लेने वाला है।

केरा कै पात मोरा मन बइरी कै कांटना उगाओ।
अब ही पिया से नयन, नयनन कै पलक ना झपाओ।।
आह भरै कहि जाँय बतिया सारी भाठी जराय देय लोहेउ कै आरी।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि अवधी काव्य का मूल्यांकन संरचनात्मक भाषा विज्ञान की दृष्टि से अधिक हुआ है। समाज भाषा विज्ञान मनोभाषा विज्ञान और भाषा का समाज"ाास्त्र भाषा विज्ञान के व्यावहारिक पक्षों को आधार बनाकर बहुत कम मूल्यांकन हुआ है। हिन्दी साहित्य में भी अवधी काव्य का सुंदर प्रयोग देखने को मिलता है। अवधी कवियों को काव्य सृजन की प्रेरणा हिन्दी साहित्य से ही मिली है। अतः अवधी कवियों ने भी अपने काव्य में साहित्य को स्थान दिया है, लेकिन अवधी कवियों के काव्य में साहित्य सृजनता का वि"ोष आग्रह दिखाई पड़ता है। इन्होंने स्वतः आये हुए अलंकारों का सम्मान करते हुए उन्हें अपने काव्य में स्थान दिया है।

सन्दर्भ सूची

1. दे0 सम्पादक राम शंकर त्रिपाठी, अवध–अवधी विविध आयाम, प्र0सं0 1991 पृ. 405
2. आचार्य राम चन्द शुक्ल, 'चिन्तामणि' प्रथम भाग, प्र0सं0 1159 पृ. 32,
3. ज्ञान सागर, दूसरा भाग, पृ. 26
4. ज्ञान सागर, दूसरा भाग, पृ.5
5. ज्ञान सागर, दूसरा भाग, पृ.5
6. ज्ञान सागर–प्रथम भाग, पृ.8
7. द्रे. श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप' कृत–परम्परा के परिपेक्ष्य में आधुनिक अवधी काव्य, प्र.सं.1983 पृ.190
8. द्रे. श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप' कृत–परम्परा के परिपेक्ष्य में आधुनिक अवधी काव्य, प्र.सं.1983 पृ.190
9. द्रे. श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप'कृत–परम्परा के परिपेक्ष्य में आधुनिक अवधी काव्य,प्र.सं. 1983 पृ.191
10. डॉ. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी काव्य, प्र.सं0 21
11. डॉ. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी काव्य, प्र.सं0 21
12. राम स्वरूप मिश्र 'वि"ाारद','सुविचार सतसई' प्र.सं.11
13. डॉ.राजेन्द्र प्रसाद 'अवधी भाषा एवं साहित्य का इतिहास' प्र.सं. 1994 पृ.9
14. डॉ.भागीरथ मिश्र,'साहित्य साधना और समाज'पृ.172